यशपाल

(1903 - 1976)

यशपाल का जन्म फिरोज़पुर छावनी में सन् 1903 में हुआ। इन्होंने आरंभिक शिक्षा स्थानीय स्कूल में और उच्च शिक्षा लाहौर में पाई। यशपाल विद्यार्थी काल से ही क्रांतिकारी गतिविधियों में जुट गए थे। अमर शहीद भगतसिंह आदि के साथ मिलकर इन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया।

यशपाल की प्रमुख कृतियाँ हैं : *देशद्रोही, पार्टी कामरेड, दादा कामरेड, झूठा सच* तथा *मेरी, तेरी, उसकी बात* (सभी उपन्यास), *ज्ञानदान, तर्क का तूफ़ान, पिंजड़े की उड़ान, फूलो का कुर्ता, उत्तराधिकारी* (सभी कहानी संग्रह) और *सिंहावलोकन* (आत्मकथा)।

'मेरी, तेरी, उसकी बात' पर यशपाल को साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। यशपाल की कहानियों में कथा रस सर्वत्र मिलता है। वर्ग-संघर्ष, मनोविश्लेषण और पैना व्यंग्य इनकी कहानियों की विशेषताएँ हैं।

यशपाल यह मानते रहे कि समाज को उन्नत बनाने का एक ही रास्ता है– सामाजिक समानता के साथ-साथ आर्थिक समानता। यशपाल ने अपनी रचनाओं में हिंदी के अलावा उर्दू और अंग्रेज़ी के शब्दों का भी बेहिचक प्रयोग किया है।

प्रस्तुत कहानी देश में फैले अंधविश्वासों और ऊँच-नीच के भेद-भाव को बेनकाब करते हुए यह बताती है कि दु:ख की अनुभूति सभी को समान रूप से होती है। कहानी धनी लोगों की अमानवीयता और गरीबों की मजबूरी को भी पूरी गहराई से उजागर करती है। यह सही है कि दु:ख सभी को तोड़ता है, दु:ख में मातम मनाना हर कोई चाहता है, दु:ख के क्षण से सामना होने पर सब अवश हो जाते हैं, पर इस देश में ऐसे भी अभागे लोग हैं जिन्हें न तो दु:ख मनाने का अधिकार है, न अवकाश!

Scanned with CamScanner

दुःख का अधिकार

मनुष्यों की पोशाकें उन्हें विभिन्न श्रेणियों में बाँट देती हैं। प्रायः पोशाक ही समाज में मनुष्य का अधिकार और उसका दर्ज़ा निश्चित करती है। वह हमारे लिए अनेक बंद दरवाज़े खोल देती है, परंतु कभी ऐसी भी परिस्थिति आ जाती है कि हम ज़रा नीचे झुककर समाज की निचली श्रेणियों की अनुभूति को समझना चाहते हैं। उस समय यह पोशाक ही बंधन और अड़चन बन जाती है। जैसे वायु की लहरें कटी हुई पतंग को सहसा भूमि पर नहीं गिर जाने देतीं, उसी तरह खास परिस्थितियों में हमारी पोशाक हमें झुक सकने से रोके रहती है।

बाज़ार में, फुटपाथ पर कुछ खरबूज़े डलिया में और कुछ ज़मीन पर बिक्री के लिए रखे जान पड़ते थे। खरबूज़ों के समीप एक अधेड़ उम्र की औरत बैठी रो रही थी। खरबूज़े बिक्री के लिए थे, परंतु उन्हें खरीदने के लिए कोई कैसे आगे बढ़ता? खरबूज़ों को बेचनेवाली तो कपड़े से मुँह छिपाए सिर को घुटनों पर रखे फफक-फफककर रो रही थी।

Scanned with CamScanner

पड़ोस की दुकानों के तख्तों पर बैठे या बाज़ार में खड़े लोग घृणा से उसी स्त्री के संबंध में बात कर रहे थे। उस स्त्री का रोना देखकर मन में एक व्यथा-सी उठी, पर उसके रोने का कारण जानने का उपाय क्या था? फुटपाथ पर उसके समीप बैठ सकने में मेरी पोशाक ही व्यवधान बन खड़ी हो गई।

एक आदमी ने घृणा से एक तरफ़ थूकते हुए कहा, "क्या ज़माना है! जवान लड़के को मरे पूरा दिन नहीं बीता और यह बेहया दुकान लगा के बैठी है।"

दूसरे साहब अपनी दाढ़ी खुजाते हुए कह रहे थे, "अरे जैसी नीयत होती है अल्ला भी वैसी ही बरकत देता है।"

सामने के फुटपाथ पर खड़े एक आदमी ने दियासलाई की तीली से कान खुजाते हुए कहा, "अरे, इन लोगों का क्या है? ये कमीने लोग रोटी के टुकड़े पर जान देते हैं। इनके लिए बेटा-बेटी, खसम-लुगाई, धर्म-ईमान सब रोटी का टुकड़ा है।"

परचून की दुकान पर बैठे लाला जी ने कहा, "अरे भाई, उनके लिए मरे-जिए का कोई मतलब न हो, पर दूसरे के धर्म-ईमान का तो खयाल करना चाहिए! जवान बेटे के मरने पर तेरह दिन का सूतक होता है और वह यहाँ सड़क पर बाज़ार में आकर खरबूज़े बेचने बैठ गई है। हज़ार आदमी आते-जाते हैं। कोई क्या जानता है कि इसके घर में सूतक है। कोई इसके खरबूज़े खा ले तो उसका ईमान-धर्म कैसे रहेगा? क्या अँधेर है!"

पास-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर पता लगा—उसका तेईस बरस का जवान लड़का था। घर में उसकी बहू और पोता-पोती हैं। लड़का शहर के पास डेढ़ बीघा भर ज़मीन में कछियारी करके परिवार का निर्वाह करता था। खरबूज़ों की डलिया बाज़ार में पहुँचाकर कभी लड़का स्वयं सौदे के पास बैठ जाता, कभी माँ बैठ जाती।

लड़का परसों सुबह मुँह-अँधेरे बेलों में से पके खरबूज़े चुन रहा था। गीली मेड़ की तरावट में विश्राम करते हुए एक साँप पर लड़के का पैर पड़ गया। साँप ने लड़के को डँस लिया।

लड़के की बुढ़िया माँ बावली होकर ओझा को बुला लाई। झाड़ना-फूँकना हुआ। नागदेव की पूजा हुई। पूजा के लिए दान-दक्षिणा चाहिए। घर में जो कुछ आटा और

Scanned with CamScanner

अनाज था, दान-दक्षिणा में उठ गया। माँ, बहू और बच्चे 'भगवाना' से लिपट-लिपटकर रोए, पर भगवाना जो एक दफे चुप हुआ तो फिर न बोला। सर्प के विष से उसका सब बदन काला पड़ गया था।

ज़िंदा आदमी नंगा भी रह सकता है, परंतु मुर्दे को नंगा कैसे विदा किया जाए? उसके लिए तो बजाज की दुकान से नया कपड़ा लाना ही होगा, चाहे उसके लिए माँ के हाथों के छन्नी-ककना ही क्यों न बिक जाएँ।

भगवाना परलोक चला गया। घर में जो कुछ चूनी-भूसी थी सो उसे विदा करने में चली गई। बाप नहीं रहा तो क्या, लड़के सुबह उठते ही भूख से बिलबिलाने लगे। दादी ने उन्हें खाने के लिए खरबूज़े दे दिए लेकिन बहू को क्या देती? बहू का बदन बुखार से तवे की तरह तप रहा था। अब बेटे के बिना बुढ़िया को दुअन्नी-चवन्नी भी कौन उधार देता।

बुढ़िया रोते-रोते और आँखें पोंछते-पोंछते भगवाना के बटोरे हुए खरबूज़े डलिया में समेटकर बाज़ार की ओर चली—और चारा भी क्या था?

बुढ़िया खरबूज़े बेचने का साहस करके आई थी, परंतु सिर पर चादर लपेटे, सिर को घुटनों पर टिकाए हुए फफक-फफककर रो रही थी।

कल जिसका बेटा चल बसा, आज वह बाज़ार में सौदा बेचने चली है, हाय रे पत्थर-दिल!

उस पुत्र-वियोगिनी के दुःख का अंदाज़ा लगाने के लिए पिछले साल अपने पड़ोस में पुत्र की मृत्यु से दुःखी माता की बात सोचने लगा। वह संभ्रांत महिला पुत्र की मृत्यु के बाद अढ़ाई मास तक पलंग से उठ न सकी थी। उन्हें पंद्रह-पंद्रह मिनट बाद पुत्र-वियोग से मूर्छा आ जाती थी और मूर्छा न आने की अवस्था में आँखों से आँसू न रुक सकते थे। दो-दो डॉक्टर हरदम सिरहाने बैठे रहते थे। हरदम सिर पर बरफ़ रखी जाती थी। शहर भर के लोगों के मन उस पुत्र-शोक से द्रवित हो उठे थे।

जब मन को सूझ का रास्ता नहीं मिलता तो बेचैनी से कदम तेज़ हो जाते हैं। उसी हालत में नाक ऊपर उठाए, राह चलतों से ठोकरें खाता मैं चला जा रहा था। सोच रहा था—

Scanned with CamScanner

शोक करने, गम मनाने के लिए भी सहूलियत चाहिए और... दु:खी होने का भी एक अधिकार होता है।

प्रश्न-अभ्यास

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए–

1. किसी व्यक्ति की पोशाक को देखकर हमें क्या पता चलता है?
2. खरबूज़े बेचनेवाली स्त्री से कोई खरबूज़े क्यों नहीं खरीद रहा था?
3. उस स्त्री को देखकर लेखक को कैसा लगा?
4. उस स्त्री के लड़के की मृत्यु का कारण क्या था?
5. बुढ़िया को कोई भी क्यों उधार नहीं देता?

लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए–

1. मनुष्य के जीवन में पोशाक का क्या महत्त्व है?
2. पोशाक हमारे लिए कब बंधन और अड़चन बन जाती है?
3. लेखक उस स्त्री के रोने का कारण क्यों नहीं जान पाया?
4. भगवाना अपने परिवार का निर्वाह कैसे करता था?
5. लड़के की मृत्यु के दूसरे ही दिन बुढ़िया खरबूज़े बेचने क्यों चल पड़ी?
6. बुढ़िया के दु:ख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद क्यों आई?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए–

1. बाज़ार के लोग खरबूज़े बेचनेवाली स्त्री के बारे में क्या-क्या कह रहे थे? अपने शब्दों में लिखिए।
2. पास-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को क्या पता चला?
3. लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया माँ ने क्या-क्या उपाय किए?
4. लेखक ने बुढ़िया के दु:ख का अंदाज़ा कैसे लगाया?
5. इस पाठ का शीर्षक 'दु:ख का अधिकार' कहाँ तक सार्थक है? स्पष्ट कीजिए।

Scanned with CamScanner

(ग) निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए–

1. जैसे वायु की लहरें कटी हुई पतंग को सहसा भूमि पर नहीं गिर जाने देतीं उसी तरह खास परिस्थितियों में हमारी पोशाक हमें झुक सकने से रोके रहती है।
2. इनके लिए बेटा-बेटी, खसम-लुगाई, धर्म-ईमान सब रोटी का टुकड़ा है।
3. शोक करने, गम मनाने के लिए भी सहूलियत चाहिए और... दु:खी होने का भी एक अधिकार होता है।

भाषा-अध्ययन

1. निम्नांकित शब्द-समूहों को पढ़ो और समझो–

(क) कङ्घा, पतङ्ग, चञ्चल, ठण्डा, सम्बन्ध।

(ख) कंघा, पतंग, चंचल, ठंडा, संबंध।

(ग) अक्षुण्ण, सम्मिलित, दुअन्नी, चवन्नी, अन्न।

(घ) संशय, संसद, संरचना, संवाद, संहार।

(ङ) अँधेरा, बाँट, मुँह, ईंट, महिलाएँ, में, मैं।

ध्यान दो कि ङ्, ञ्, ण्, न् और म् ये पाँचों पंचमाक्षर कहलाते हैं। इनके लिखने की विधियाँ तुमने ऊपर देखीं– इसी रूप में या अनुस्वार के रूप में। इन्हें दोनों में से किसी भी तरीके से लिखा जा सकता है और दोनों ही शुद्ध हैं। हाँ, एक पंचमाक्षर जब दो बार आए तो अनुस्वार का प्रयोग नहीं होगा; जैसे– अम्मा, अन्न आदि। इसी प्रकार इनके बाद यदि अंतस्थ य, र, ल, व और ऊष्म श, ष, स, ह आदि हों तो अनुस्वार का प्रयोग होगा, परंतु उसका उच्चारण पंचम वर्णों में से किसी भी एक वर्ण की भाँति हो सकता है; जैसे– *संशय, संरचना में 'न्', संवाद में 'म्' और संहार में 'ङ्'।*

(ं) यह चिह्न है अनुस्वार का और (ँ) यह चिह्न है अनुनासिक का। इन्हें क्रमश: बिंदु और चंद्र-बिंदु भी कहते हैं। दोनों के प्रयोग और उच्चारण में अंतर है। अनुस्वार का प्रयोग व्यंजन के साथ होता है अनुनासिक का स्वर के साथ।

2. निम्नलिखित शब्दों के पर्याय लिखिए–

ईमान .....

बदन .....

अंदाज़ा .....

बेचैनी .....

गम .....

Scanned with CamScanner

दर्ज़ा .....
ज़मीन .....
ज़माना .....
बरकत .....

3. निम्नलिखित उदाहरण के अनुसार पाठ में आए शब्द-युग्मों को छाँटकर लिखिए-

उदाहरण : *बेटा-बेटी*

4. पाठ के संदर्भ के अनुसार निम्नलिखित वाक्यांशों की व्याख्या कीजिए–

बंद दरवाज़े खोल देना, निर्वाह करना, भूख से बिलबिलाना, कोई चारा न होना, शोक से द्रवित हो जाना।

5. निम्नलिखित शब्द-युग्मों और शब्द-समूहों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) छन्नी-ककना अढ़ाई-मास पास-पड़ोस
दुअन्नी-चवन्नी मुँह-अँधेरे झाड़ना-फूँकना
(ख) फफक-फफककर बिलख-बिलखकर
तड़प-तड़पकर लिपट-लिपटकर

6. निम्नलिखित वाक्य संरचनाओं को ध्यान से पढ़िए और इस प्रकार के कुछ और वाक्य बनाइए :

(क) 1. लड़के सुबह <u>उठते ही</u> भूख से बिलबिलाने लगे।
2. उसके लिए तो बजाज की दुकान से कपड़ा <u>लाना ही</u> होगा।
3. चाहे उसके लिए माँ के हाथों के छन्नी-ककना <u>ही</u> क्यों न बिक जाएँ।

(ख) 1. अरे <u>जैसी</u> नीयत होती है, अल्ला भी <u>वैसी ही</u> बरकत देता है।
2. भगवाना <u>जो</u> एक दफे चुप हुआ <u>तो</u> फिर न बोला।

योग्यता-विस्तार

1. 'व्यक्ति की पहचान उसकी पोशाक से होती है।' इस विषय पर कक्षा में परिचर्चा कीजिए।
2. यदि आपने भगवाना की माँ जैसी किसी दुखिया को देखा है तो उसकी कहानी लिखिए।
3. पता कीजिए कि कौन-से साँप विषैले होते हैं? उनके चित्र एकत्र कीजिए और भित्ति पत्रिका में लगाइए।

Scanned with CamScanner

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

पोशाक	–	वस्त्र, पहनावा
अनुभूति	–	एहसास
अड़चन	–	विघ्न, रुकावट, बाधा
अधेड़	–	आधी उम्र का, ढलती उम्र का
व्यथा	–	पीड़ा, दुःख
व्यवधान	–	रुकावट, बाधा
बेहया	–	बेशर्म, निर्लज्ज
नीयत	–	इरादा, आशय
बरकत	–	वृद्धि, लाभ, सौभाग्य
खसम	–	पति
लुगाई	–	पत्नी
परचून की दुकान	–	आटा, चावल, दाल आदि की दुकान
सूतक	–	परिवार में किसी बच्चे के जन्म होने या किसी के मरने पर कुछ निश्चित समय तक परिवार के लोगों को न छूना, छूत
कछियारी	–	खेतों में तरकारियाँ बोना
निर्वाह	–	गुज़ारा
मेड़	–	खेत के चारों ओर मिट्टी डालकर बनाया हुआ घेरा, दो खेतों के बीच की सीमा
तरावट	–	गीलापन, नमी, शीतलता, ठंडक
ओझा	–	झाड़-फूँक करने वाला
छन्नी-ककना	–	मामूली गहना, जेवर
सहूलियत	–	सुविधा

Scanned with CamScanner

कक्षा - 9 वीं हिन्दी

स्पर्श - भाग - 1

गद्य खंड - पाठ - 2 'दुःख का अधिकार'

लेखक - यशपाल (1903 - 1976)

प्रश्न - अभ्यास

मौखिक

प्र.1 किसी व्यक्ति की पोशाक को देखकर हमें क्या पता चलता है?

अथवा

मनुष्य के जीवन में पोशाक का क्या महत्व है?

उत्तर- किसी व्यक्ति की पोशाक से समाज में उसके स्तर और अधिकारों का पता चलता है। साथ ही, वह व्यक्ति गरीब वर्ग का है या अमीर-वर्ग का, यह भी पता चलता है।

प्र.2 खरबूजे बेचनेवाली स्त्री से कोई खरबूजे क्यों नहीं खरीद रहा था?

उत्तर खरबूजे बेचनेवाली स्त्री घुटनों पर सिर रखकर फफक-फफककर रो रही थी इसलिए कोई उससे खरबूजे नहीं खरीद रहा था।

प्र.3 उस स्त्री को देखकर लेखक को कैसा लगा?

उत्तर उस स्त्री को देखकर लेखक के मन में व्यथा-सी उठी और वे उसके दुःख का कारण जानना चाहते थे।

~~प्रश्न~~

प्र.4 उस स्त्री के लड़के की मृत्यु का क्या कारण था?

उत्तर- साँप के डँसने के कारण उस स्त्री के लड़के की मृत्यु हो गई थी।

प्र.5 बुढ़िया को कोई भी क्यों उधार नहीं देता?

उत्तर- बुढ़िया बहुत गरीब थी। उसका इकलौता कमाऊ बेटा मर चुका था। उसके घर में उधार चुकाने वाला कोई नहीं था। इसलिए उसे कोई भी उधार नहीं देता।

Scanned with CamScanner

हिन्दी

St. Peter's Sr. Sec. School 45/220 (M.P.) Agra Road JAORA

लिखित →

नोट→ लिखित का प्रश्न क्र. एक का उत्तर देखने के लिए मौखिक का प्र. क्रमांक 1 का उत्तर देखिए।

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में लिखिए

प्र. 2 पोशाक हमारे लिए कब बंधन और अड़चन बन जाती है?

उत्तर- जब हम समाज की नीचली श्रेणियों की अनुभूति को समझना चाहते हैं। उस समय पोशाक हमारे लिए बंधन और अड़चन बन जाती है।

प्र. 3 लेखक उस स्त्री के रोने का कारण क्यों नहीं जान पाया?

उत्तर लेखक उस स्त्री के रोने का कारण इसलिए नही जान पाया क्योंकि उसके समीप बैठ सकने में उसकी उसकी पोशाक अड़चन बन रही थी अर्थात उनकी सामाजिक स्तर की डोर उन्हें ऐसा करने से रोक रही थी।

प्र. 4 भगवाना अपने परिवार का निर्वाह कैसे करता था?

उत्तर- भगवाना शहर के पास डेढ़ बीघा ज़मीन पर कछियारी का काम करके अपने परिवार का निर्वाह करता था।

प्र. 5 लड़के की मृत्यु के दूसरे दिन ही बुढ़िया खरबूज़े बेचने क्यों चल पड़ी

उत्तर - बुढ़िया गरीब थी। उसका इकलौता कमाऊ बेटा मर चुका था। ऐसी स्थिति में उसे कोई उधार नहीं देता। बहू बुखार से तप रही थी, बच्चे भूखे थे, इसलिए वह लाचार होकर बाज़ार में खरबूज़े बेचने चली गई।

प्र. 6 बुढ़िया को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद क्यों आई?

उत्तर बुढ़िया के दुःख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संभ्रात महिला की याद इसलिए आई क्योंकि एक वर्ष पहले उस संभ्रात महिला ने भी

Scanned with CamScanner

अपने पुत्र को खो दिया था। दोनों का दुःख एक समान था परंतु वह महिला पुत्र शोक में अढ़ाई महिने तक पलंग से नहीं उठी थी। उसे बार-बार मूर्छा आ जाती थी। दो डॉक्टर हमेशा उसके सिरहाने बैठे रहते थे। इसलिए लेखक को बुढ़िया के दुःख का अंदाजा लगाने के लिए उस संभ्रात महिला की याद आ गई।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60) शब्दों में लिखिए -

प्र.1 बाज़ार में लोग खरबूजे बेचने वाली स्त्री के बारे में क्या-क्या व्यंग्य कर रहे थे?

उत्तर - बाज़ार में लोग खरबूजे बेचनेवाली स्त्री के बारे में निम्नलिखित व्यंग्य कर रहे थे -

- ★ कोई उसे बेहया कह रहा था।
- ★ कोई उसकी नीयत में खोट बता रहा था।
- ★ कोई उसे पत्थर दिल बता रहा था।
- ★ कोई उसके धर्म तथा ईमान पर उँगली उठा रहा था।
- ★ कोई कह रहा था कि इनके लिए रिश्ते-नाते कोई महत्व नहीं रखते। इनके लिए तो सब रोटी का टुकड़ा है।

प्र.2 पास पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को क्या पता चला?

उत्तर - पास-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को यह पता चला कि बुढ़िया के 23 साल का लड़का था। घर में बेटे के अलावा पोता-पोती और बहू भी थे। लड़का थोड़ी-सी जमीन पर खेती करके अपने परिवार को पालता था। एक दिन सुबह जब वह पके खरबूजों को चुन रहा था तो साँप पर पैर पड़ने के कारण साँप ने उसे डँस लिया और उसकी मृत्यु हो गई।

प्र.3 लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया माँ ने क्या-क्या उपाय किए?

Scanned with CamScanner

हिन्दी

St. Peter's ... School 457226 (M.P.)

उत्तर - लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया माँ ने निम्नलिखित उपाय किए -
- ओझा को बुलाकर झाड़-फूँक करवाया।
- नागदेव की पूजा करवाई।
- दान-दक्षिणा दी।

प्र.4 लेखक ने बुढ़िया के दुःख का अंदाजा कैसे लगाया?

उत्तर - लेखक ने बुढ़िया के दुःख का अंदाजा लगाने के लिए उनके पड़ोस की संभ्रात महिला को याद किया। उस संभ्रात महिला ने भी अपने इकलौते पुत्र को खो दिया था। वह पुत्र की मृत्यु के बाद अढ़ाई मास तक बिस्तर से नहीं उठ सकी। दो डॉक्टर हमेशा उसके सिरहाने बैठे रहते थे। उस संभ्रात महिला और बुढ़िया का दुःख समान था।

प्र.5 इस पाठ का शीर्षक 'दुःख का अधिकार' कहाँ तक सार्थक है? स्पष्ट कीजिए -

उत्तर - इस पाठ का शीर्षक 'दुःख का अधिकार' पूरी तरह से सार्थक है - क्योंकि पाठ में बताया गया है कि गरीब बुढ़िया और अमीर संभ्रात महिला का दुःख समान है। परंतु बुढ़िया गरीब थी और उसके पास दुःख मनाने की सहूलियत नहीं थी, इसलिए वह मजबूरी में बाज़ार में सौदा करने चली गई। लेकिन संभ्रात महिला के पास दुःख मनाने की सहूलियत थी। वह पुत्र शोक में अढ़ाई महीने तक बिस्तर से नहीं उठी। दो डॉक्टर हमेशा उसके सिरहाने बैठे रहते थे। इसलिए हमें इस पाठ का शीर्षक दुःख का अधिकार एकदम सार्थक लगा।

(ग) निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए ->

1. जैसे वायु की लहरें कटी हुई पतंग को सहसा भूमि पर नहीं गिर जाने देती उसी तरह खास परिस्थितियों में हमारी पोशाक हमें झुक सकने

Scanned with CamScanner

से रोके रहती है।

उत्तर - जैसे वायु की लहरें कटी हुई पतंग को सहसा भूमि पर नहीं गिरने देती उसी प्रकार जब हम अपने से निचली श्रेणी के लोगों के दुःख को समझना चाहते हैं तब हमारी सामाजिक स्तर की ओर हमें नीचे झुकने से रोक लेती है।

प्र.2 इनके लिए बेटी - बेटा, खसम - लुगाई सब रोटी का टुकड़ा है।

उत्तर - अमीर लोग गरीब लोगों पर व्यंग्य करते हुए कह रहे कि इन लोगों के लिए रिश्ते - नाते का कोई महत्व नहीं होता। इनके लिए तो रोटी का टुकड़ा ही सब कुछ है।

प्र.3 शोक करने, गम मनाने के लिए भी सहूलियत चाहिए और ..... दुःखी होने का भी एक अधिकार होता है।

उत्तर - अमीर लोगों को दुःख मनाने की सहूलियत होती है परंतु गरीब लोगों को तो दुःख मनाने का अधिकार भी नहीं होता है।

भाषा - अध्ययन -> विद्यार्थी स्वयं करें।

योग्यता - विस्तार - ~~प्रश्न क्र.~~

प्रश्न क्रमांक - 2 की कहानी अपने शब्दों में लिखिए।

Trapti Kumawat

Scanned with CamScanner